PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 10, ISSUE 2

शास्त्रीय संगीत मे बंदिश का महत्व

डॉ. वृषाली र. देशमुख
जे. डी. पाटील सांगळूदकर महाविद्यालय दर्यापूर,
जी. अमरावती **महाराष्ट्र भारत**

सारांश :-

बंदिश कहने के बाद ख्याल ही बंदिश, बंदिश का मतलब है शब्द प्रधान बंदिश जिसे वाद्य यंत्रों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। बंदिश शास्त्रीय संगीत में लयबद्ध काव्य का एक रूप है, और बंदिश लयबद्ध गायन का एक रूप है। राग की मुद्रा भी अनेक सीमाओं से उभरती हुई दिखाई देती है। रमणलाल मेहता के अनुसार बंदिश राग का एक विशेष रूप है और राग का सौन्दर्य नये रूपों से निर्मित होता है। तो बंदिश रागके कई रूप दिखाने में काम आती है. बबनराव हळदनकर कहते हैं, "बंदिशी में सब कुछ शुरू से अंत तक महत्वपूर्ण और योजनाबद्ध है। बंदिशी के तार, उनके सुरों का खिंचाव, उनके खंड, बंदिशी के अंत की सुंदरता एक बंदिशी की पहचान है।

उद्देश :-

प्राचीन एवं मध्यकालीन गायन शैलियों के अन्तर्गत गीतियां, जातियां, प्रबन्ध तथा ध्रुपद आदि शैलिया भारतीय संगीत में अपना-अपना एक निजी इतिहास रखती है और शोध के अन्तर्गत भी यह सभी स्वयं में एक विस्तृत विषय हो सकती हैं। परन्तु उपरोक्त बिन्दु के अन्तर्गत इन सभी संगीत शैलियों अथवा प्रकारों का उपयोग बंदिश के संक्षिप्त इतिहास के अन्तर्गत यहां पर मात्र उदाहरण (बंदिश) के रूप में ही दिया जा रहा है। जिससे यह और भी

भलीभाँति स्पष्ट हो जाएगा कि प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक बंदिश के स्वरूप में किस तरह से परिवर्तन आया है और संगीत में यह कितनी उपयोगी रही है।

प्रस्तावना :- बंदिश का अर्थ एवं परिभाषा -- बंदिश का शाब्दिक अर्थ है-बंदिश (संज्ञा स्त्री) (1) बाँधने की क्रिया या भाव (2) पहले से किया हुआ प्रबन्ध (3) गीत, कविता आदि की शब्द योजना

बंदिश शब्द मूलत उर्दू भाषा का शब्द है, जिसका प्रयोग हिन्दुस्तानी संगीत विधाओं में निबद्ध रचनाओं के लिए होता है। भातखंडे जी ने अपनी क्रमिक पुस्तक मालिका में रागों की बंदिशों के लिए चीज शब्द का प्रयोग किया है।

चीज शब्द का अर्थ हिन्दी में इस प्रकार होता है- चीज (संज्ञा पु) (1) पदार्थ वस्तु द्रव्य (2) अलंकार, गहना (3) गीत

संक्षिप्त रूप में बंदिश का शाब्दिक अर्थ हुआ बाधना या कसना अर्थात विशिष्ट राग एवं विशिष्ट ताल में निबद्ध गीत वा स्वर रचना ही बंदिश है। गायन-वादन की किसी भी विधा में बंदिश और गायन अथवा वादन शैली से दो चीजे मूलभूल आधार होती है। स्वर शब्द तालबद्ध पद रचना या गत रचना को बंदिश की संज्ञा दी जाती है और इस बंदिश के आधार पर प्रस्तुत की जाने वाली गायन-वादन क्रिया का विशेष ढंग या तरीका ही गायन-वादन शैली कहा जाता है|प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक संगीत में बड़े क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है। हिन्दुस्तानी संगीत में जहां नए-नए संगीत प्रकार प्रचार में आए हैं वहीं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रधान तत्व राग के सम्बन्ध में भी अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप ही राग संगीत की गीत रचनाओं पर भी सामाजिक प्रवृत्तियों, व्यवहार, आवश्यकताओं, विभिन्न भाषा एवं रीति-रिवाजों का समय के साथ-साथ गहरा प्रभाव पड़ता आया है।

भरत से पूर्व काल में वैदिक काल के ऋक, पाणिक तथा गाथा जैसे गीतों के उपरात मद्रक, अपरान्तक, उल्लोप्यक प्रकरी, ओवणक रोविन्दक, उत्तर और वर्धमानक सात गीतों के प्रचलन का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त होता है। यह गीत स्वर तथा तालबद्ध थे। इन गीतों के विभागों अथवा खण्डों के लिए वस्तु की संज्ञा दी जाती थी।

'भरत के बाद मतंग ने बृहददेशी में विभिन्न गीतियों में गाए गये ग्राम रागों का वर्णन किया है। यह गीतियां पद और लय से युक्त वर्ण, अलंकार आदि से सुसज्जित थीं। इन गीतियों के विभिन्न प्रकार बताएं है।

प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक भारतीय संगीत बदला है संगीत से सम्बन्धित शैलियां बदली है तथा शैलियों से सम्बन्धित संगीत रचनाओं में बहुत बदलाव आया है। संगीत रचनाओं (बंदिशों में बदलाव का एक मुख्य कारण भाषा भी रहा है। प्राचीन व मध्य समय में प्राधान्य तो संस्कृत भाषा का था किन्तु देशी भाषाओं में भी रचनाएं हुई। आधुनिक रचनाओं में तो जनसाधारण से सम्बन्धित भाषाओं जैसे-भोजपुरी, बृज, पंजाबी, हिन्दी आदि सभी भाषाओं में संगीत रचनाएं अथवा बंदिश प्राप्त होती हैं।

आधुनिक रागदारी संगीत में स्थायी अन्तरा आलाप लयकारी तथा तान एक राग बंदिश के मुख्य तत्व होते हैं। इनमें से आलाप लयकारी व तान में गायक अथवा वादक को अपने-अपने इस शैलियों के अनुसार राग के नियमों में रहकर विविधता, सृजनात्मकता तथा बढ़त करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

ख्याल गायन में बंदिश के घटकों या भागों के अन्तर्गत दो भाग होते है-स्थायी और अन्तरा। स्थायी में राग के मन्द्र व मध्य सप्तक के स्वरों में बढ़त करते हुए विस्तार होता है। दूसरे भाग अन्तरे में राग के मध्य और तार सप्तकके स्वरोंका विस्तार किया जाता है। परन्तु बढ़त प्रारम्भ करने से पहले अधिकतर पूरी बंदिश गाई जाती {1} बंदिश का मुखड़ा ताल का सम दिखाते हुए तालका सन्दर्भ स्थान प्रकट करता है। इसके अलावा बंदिश का मुखडा राग-विस्तार का पूरक होना चाहिए।

इस प्रकार 20वीं शताब्दी में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा एवं प्रचार-प्रसार के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तनों एवं सरकारी प्रोत्साहन के कारण संगीतज्ञों के आपसी सम्पर्क बढ़े और उनकी संगीत सृजन क्षमता में भी काफी समृद्धि हुई, एक नई स्फूर्ति जागी। जिसके फलस्वरूप पारम्परिक संगीत रचनाओ मे सुधार हुआ और नही संगीत रचनाओ को रचने की प्रेरणा व प्रोत्साहन मिला

परम्परागत बंदिशों में परिवर्तन :-

सदारंग, अदारंग, मनरंग, हररंग आदि वाग्यकारों की बंदीशे आज परंपरागत बंदिशों के रूप में प्रचलित है। लगभग 100-200 साल पुरानी इन बंदिशो पर समय-समय पर विभिन्न घरानों का प्रभाव पड़ता रहा है। जिस कारण अलग-अलग घरानों में गायकों ने उन्हें अपनी घरानेदार गायकी के अनुरूप गाया। इस वजह से प्रत्येक घराने में बंदिश प्रस्तुतिकरण भिन्न हो गया और प्रत्येक आलाप लयकारी, तानकारी तथा गायकी के वजन में भी भिन्नता आ गई। इसके परिणामस्वरूप विविध घरानों में बंदिश के स्वरूप में काफी परिवर्तन हो गया।

बंदिश का रूप :-

संगीत में मुख्यतः विशेष प्रकार की रचनाओं के क्रम में जो विलक्षणता रहती है वह प्रायः सांगीतिक कलाकृति का मूल है। जैसे भक्ति संगीत की रचना से उत्पन्न भक्ति रस उस रचना की विलक्षणता है अथवा विचित्रता है और इसी तरह विवाहोत्सव पर अथवा पुत्र जन्म पर बजाई जाने वाली धुनों से उत्पन्न श्रृंगार रस उन रचनाओं की विचित्रता है जिनमें संगीत के विभिन्न रूपों के दर्शन होते हैं। इसी तरह शास्त्रीय संगीत में मसीतखानी व रज़ाखानी गतोद्वारा और विलम्बित ख्याल अथवा बड़ा ख्याल और द्रुत अथवा छोटा ख्याल द्वारा राग का रूप प्रदर्शित किया जाता है। प्रस्तुत उदाहरण शास्त्रीय संगीत में निहित बंदिश के वादन व गायन स्वरूपों को परलक्षित करते हैं

तबले के प्रमुख घरानों में प्रयुक्त होने वाली बंदीशोका विवरण :-

आज यह समस्या हमारे तबला वादको तथा विद्यार्थियों के सम्मुख हमेशा समस्या खड़ी रहती है कि कौन सी बंदिश किस घराने से संम्बद्ध रखती है। तथा किस धराने में किन-किन बंदीशोका वादन किया आता है इस समस्या का एक कारण तो यह है कि आज तबला वादन कोई एक किसी एक घराने का वादन किसी एक समय करते नहीं देखे जाते हैं। वे प्रायः अपने वादन में लोकप्रियता प्राप्त करने हेतु विभिन्न घरानों की बंदीशो का प्रयोग एक साथ करते देखे जाते हैं जिसमें यह समस्या और भी अधिक जटिल हो जाती है। इस प्रकार देखे तो आज घरानेदार तबलावादक घराने की शुद्धता का कड़ाई से पालन नहीं करते हैं। ऐसे में तबला विद्यार्थियों तथा साधारण जनमानस को तबला विषय की थोड़ी जानकारी रखते हैं।

के लिए यह ज्ञात करना काफी कठिन हो जाता है कि कौन सी बंदिशे किस घराने के वादन मे प्रयुक्त की जाती है|

निष्कर्ष :-

यह बात भी सत्य है कि बंदिश रचना हरेक की वश की बात नहीं होती। इसके लिए स्वाभाविक प्रतिभा व सृजनात्मकता की निरंतरता के साथ-साथ रचनाकर्ता को संगीत शास्त्र के साथ-साथ काव्य व साहित्य का भी अच्छा ज्ञान होना जरूरी है। पर बंदिश निर्माण के कोई नियम पहले से निश्चित नहीं होने चाहिए। क्योंकि कभी-कभी कोई स्वर-संगत अथवा स्वर-समूह पहले मन में गूँजता है, बाद में उस पर शब्द बिठाये जाते हैं। कभी पहले ही शब्द रचना होती है और बाद में उसे स्वरों में बैठाया जाता है। कभी-कभी पुरानी किसी बंदिश के आधार पर ही नई बंदिश बना दी जाती है |बंदिश के बारे मे उपरोक्त सभी टिपणिया यह सिद्ध करती है कि बंदिश ये शास्त्रीय संगीत मे महत्वपूर्ण घटक है|

संदर्भ सूची :-

1) हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन ,लेखक -डॉ. नरेश कुमार ,कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली

2) सांगीतिक बंदिश रचना,सिद्धांत एवं स्वरूप लेखक :-डॉ. सीमा शर्मा कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली

3) तबले के घराने वादन शैलिया एवं बंदिशें:-डॉ. सुदर्शन राम, कनिष्क पब्लिशर्स - नई दिल्ली

4) संगीत ,कला आणि शिक्षण लेखक:- पंडित सुधीर माईनकर ,संस्कार प्रकाशन

5) कला शास्त्र विशारद भाग ३ (विशारद) लेखक :-डॉ. शिल्पा बहुलेकर संस्कार प्रकाशन

6) संगीत चिंतन , लेखक :-डॉ.भोजराज चौधरी ,नभ प्रकाशन